International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 7.9 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

21वीं सदी में भारतीय लोकतंत्र के समक्ष चुनौतियाँ : एक विवेचना

वंश गोपाल
असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान
गोसवामी तुलसीदास राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कर्वी, चित्रकूट

सारांश
भारतीय स्वतंत्रता संग्राम से लोकतंत्र को भरपूर्ण प्रोत्साहन मिला तथा स्वतंत्रता के उपरांत भारत ने लोकतंत्र आत्मक गणराज्य स्थापित कर 72 वर्षों में अनेक सफलताएं प्राप्त की, भारतीय प्रजातंत्र आरंभ में निम्र्तर साक्षरता विस्तार गरीबी, शिक्षा, बेरोजगारी आदि के साथ संघर्ष करते हुए विकास के पथ पर अग्रसर हुआ भारतीय प्रजातंत्र ने विश्व की कुल आबादी की 16, 15% आबादी को संभाल रखा है, जबकि हमारे साथ आजाद हुए दूसरे देशों को लंबे समय तक सैनिक शासन या तानाशाही झेलनी पड़ी यह भारतीय लोकतंत्र की मजबूती का ही पर्याय है, राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया से आज भारत विश्व का सबसे बड़ा एवं सफल लोकतंत्र तथा विश्व की चौथी बड़ी अर्थव्यवस्था है विश्व के अनेक कंपनियों का अधिग्रहण भारतीयों द्वारा किया जा चुका है, आज हम सूचना एवं प्रौद्योगिकी विशेषज्ञ अंतरिक्ष के क्षेत्र में हम अग्रणी भूमिका निभा रहे हैं भारतीय समाज में राजनीतिक सहभागिता विकास आधुनिकीकरण तथा आर्थिक विकास की दर में वृद्धि हुई है जनता का मतदान व्यवहार परिपक्क हुआ है।
शब्दकुंजी- लोकतंत्र, आर्थिक असंतुलन, चुनौती ।

प्रस्तावना

विश्व की पुरानी सभ्यताओं में से एक भारत लोकतंत्र का आधार स्तंभ है यहां विविध भाषाएँ संस्कृतियाँ वर्गोन धर्मों पुष्पों की माला की तरह भारतीय लोकतंत्र में समाहित है समतापूर्ण समाज निर्माण करने की आकांक्षा ने मनुष्य को लोकतंत्र के लिए प्रेरित किया क्योंकि यह ऐसी व्यवस्था है जिसमें सर्वसाधारण को अधिकतम भागीदारी का अवसर मिला है हालांकि एक गणराज्य के रूप में भारत को केवल 72 वर्ष ही हुए हैं किंतु यहां लोकतंत्र की परंपराओं परंपरा अति प्राचीन है वैदिक रूप वैदिक युग से ही यहां गणराज्य चले आ रहे हैं जिसमें जनता की प्रत्यक्ष भागीदारी होती है भारतीय स्वतंत्रता संग्राम से लोकतंत्र को भरपूर्ण प्रोत्साहन मिला तथा स्वतंत्रता के उपरांत भारत ने लोकतंत्र आत्मक गणराज्य स्थापित कर 72 वर्षों में अनेक सफलताएं प्राप्त की भारतीय प्रजातंत्र आरंभ में निम्र्तर साक्षरता, विस्तार, गरीबी, शिक्षा, बेरोजगारी आदि के साथ संघर्ष करते हुए विकास के पथ पर अग्रसर हुआ है भारतीय प्रजातंत्र ने विश्व की कुल आबादी की 16 , 15% आबादी को संभाल रखा है जबकि हमारे साथ आजाद हुए दूसरे देशों को लंबे समय तक सैनिक शासन या तानाशाही झेलनी पड़ी यह भारतीय लोकतंत्र की मजबूती का ही पर्याय है ।

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 7.9 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया से आज भारत विश्व का सबसे बड़ा एवं सफल लोकतंत्र तथा विश्व की चौथी बड़ी अर्थव्यवस्था है विश्व के अनेक कंपनियों का अधिग्रहण भारतीयों द्वारा किया जा चुका है आज हम सूचना एवं प्रौद्योगिकी विशेषज्ञ अंतरिक्ष के क्षेत्र में हम अग्रणी भूमिका निभा रहे हैं भारतीय समाज में राजनीतिक सहभागिता, विकास, आधुनिकीकरण तथा आर्थिक विकास की दर में वृद्धि हुई है जनता का मतदान व्यवहार परिपक्व हुआ है तथा संविधानिक संस्थाओं के प्रति विश्वास एवं जागरूकता बड़ी है विभिन्न संविधान संशोधन के माध्यमों से हमारी लोकतांत्रिक व्यवस्था और भी मजबूत हुई है किंतु अभी भी भारत के बहुमुखी विविधता पूर्ण समाज में लोकतांत्रिक व्यवस्था का क्षेत्र अधिक व्यापक करने की आवश्यकता महसूस की जाती रही है इस दृष्टि से पंचायत व्यवस्था महिला आरक्षण भारतीय लोकतंत्र के विकास में मिल के पत्थर हैं नगरी यह निकायों में महिलाओं का आरक्षण 33% से बढ़कर 50% कर दिया गया है अनुच्छेद 243 राजनीतिक अधिकारों द्वारा आबादी के बड़े हिस्से की विभिन्न क्षेत्र में रचनात्मक भागीदारी संभव हुई है । समाज के निचले स्तर में कई लोगों ने राजनीति के द्वारा अपनी जीवन शैली में सुधार और राष्ट्रीय धारा में भागीदारी की सामर्थ का विकास तथा राजनीति स्तर पर परस्पर सहयोग के दौर की शुरुआत हुई है और लोकतांत्रिक प्रक्रिया में परिपक्वता आई है आज लगभग 35 लाख जन प्रतिनिधि हमारी लोकतांत्रिक व्यवस्था को गतिशील किए हुए हैं सामाजिक क्षेत्र में भी आज वैश्वीकरण के परिणाम स्वरूप छुआछूत रंग भेद जाति भेद नस्ल भेद क्षेत्रियवाद भाषावाद से ऊपर उठकर सोचने विकास को प्राथमिकता देने लगा है चुनाव में जिस तरह भारतीय मतदाताओं ने क्षेत्रीय दलों के स्थान पर राष्ट्रीय दलों को वरीयता दी उससे यही प्रतीत होता है कि आम जनता भी लोकतंत्र में स्थायित्व की ओर अग्रसर है ।

किंतु 21 सी सदी में भारतीय लोकतंत्र के समक्ष एक विशेष प्रकार का संकट खड़ा हुआ है, जो भारतीय लोकतंत्र को कमजोर कर रहा है ऊपर से देखने में यह नेतृत्व और चरित्र का संकट लगता है पर वास्तव में यह भारतीय समाज और लोकतांत्रिक व्यवस्था पर संकट है तथा सामाजिक चरित्र का हास से धन सुख का पर्यायवाची बन गया है । भारतीय लोकतंत्र के समक्ष अशिक्षा, सांप्रदायिकता, जातिवाद, भाषावाद, क्षेत्रियवाद, आर्थिक असंतुलन, आतंकवाद आदि प्रमुख चुनौतियां हैं जिनका सतत जागरूकता एवं संग्रहित रूप से मुकाबला करने की आवश्यकता है ।

लोकतंत्र की एक प्रमुख चुनौती देश की लगभग 30% जनता का शिक्षा तथा महिलाओं का साक्षरता प्रतिशत कम होना है जनप्रतिनिधियों के लिए किसी प्रकार की शैक्षिक योग्यता निर्धारित न होना जनतंत्र के लिए बहुत बड़ा खतरा है अतः शिक्षा की संपत्ति के लिए शिक्षा का गुणात्मक विचार प्रचार एवं आत्मसर किया जाना परम आवश्यक है शिक्षण संस्थानों जनमानस बुद्धि जीवियों को सरस्वती एवं श्रम की उपासना एक साथ करनी होगी जिससे सामाजिक एवं राष्ट्रीय विकास को गति तथा लोकतंत्र मजबूत हो मिल सके आज प्रत्येक वर्ग है अपने हितों को पूरा करने हेतु सत्ता में आना चाहते हैं जिसमें वर्ग विभाजन एवं राजनीतिक अस्थिरता पैदा हो रही है आज अधिकांश जनप्रतिनिधित्व चुनाव विकास संबंधित झूठ के साथ विदाई का में प्रवेश करता है कि जानता है हर सांसद जानती है चुनाव आयोग जानता है और फिर भी इस

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 7.9 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

झूठ के साथ लोकतंत्र की यात्रा शुरू होती है आज का सवत्र देखने में आ रहा है की परियां बदलती हैं परंतु उनके भीतर स्वार्थ नहीं बदलते हैं ।बेरोजगारी की समस्या आज लोकतंत्र में बाधा के रूप में दिखाई पड़ रही है अगर बेरोजगार को रोजगार उपलब्ध करवाने की दशा में प्रयत्न नहीं किया गया तो लोकतंत्र को चिरस्थाई बनाए रखना संभव हो जाएगा ।

सांप्रदायिकता प्रदेशिकता और भाषावाद की समस्याएं पिछले 70 वर्षों से भारतीय लोकतंत्र के लिए सर दर्द रही है जिससे विघटनकारी तत्वों को बढ़ावा मिल रहा है । महंगाई और भ्रष्टाचार ने मध्यम वर्ग की शक्ति को कमजोर और उसके रचनात्मक प्रतिभा को कुण्ठित कर दिया है एक और करोड़ों की संपत्ति के मालिक रात दिन विकास और वैभव का अशोभनीय प्रदर्शन करते हैं तो दूसरी ओर लाखों आदमी मुख मेरी के शिकायत और आर्थिक शोषण की प्रवृत्ति और राजनीति भ्रष्टाचार भारतीय लोकतंत्र के प्रबल शत्रु हैं ।आज राजनीति के नैतिक मूल लगभग समाप्त हो चुके हैं भ्रष्टाचार दिन दूनी रात चौगुनी गति से बढ़ने लगा है हमारी वर्तमान चुनाव प्रणाली हमारे संविधान निर्माता की इच्छा अनुसार वास्तविक लोकतंत्र अर्थात बहुमत का शासन स्थापित करने में सफल सिद्ध नहीं हो पा रही है । जातिवाद, सामाजिक समानता एवं सामाजिक राजनीतिक लोकतंत्र के विकास में मुख्य अवरोध तत्व है संकीर्ण निष्ठाओ एवं अंधविश्वासों को बढ़ावा देता है जिसमें धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र एवं राजनीति के विकास का मार्ग अवरोधक होता है और समाज में सौहाद एवं बंधुतत्व का हास होता है आज लोकतंत्र को वास्तविक खतरा जातिवाद और अस्पृश्यता से है हमारे चुनाव में आज भी इन्हें बढ़ावा दिया जाता है जिससे अलगाववाद की प्रवृत्ति जन्म लेती है जो राष्ट्र की एकता के लिए खतरा है । क्षेत्रवाद के कारण संकीर्ण निष्ठाओं का जन्म होता है तथा भूमिपुत्र विदवेस एवं अलगाव वादी प्रवृत्तियों को बढ़ावा मिलता है जिस राजनीतिक एकता एकीकरण राजनीतिक विकास खंडित होता है बढ़ती जनसंख्या के कारण बेरोजगारी गरीबी संसाधनों में संतुलन, स्वास्थ्य, शिक्षा सेवाओं में कमी आदि की समस्याएं गंभीर रूप लेती जा रही हैं और आंतोगत्वा राष्ट्रीय सामाजिक विकास प्रक्रिया अवरुद्रध् हो जाती है ।

आतंकवाद संपूर्ण मानव जाति के लिए अभिशाप है जो हजारों लाखों निर्दोष लोगों को अकारण ही उनके जीवन घरों संपत्ति आदि से वंचित कर देता है इसके निराकरण के लिए देश को अपनी उर्जा इस और लगानी पड़ती है जिससे राष्ट्र विकास की मुख्य धारा से दशकों पीछे चला जाता है । पर्यावरण प्रदूषण तथा असंतुलन एवं जल समस्या वर्तमान में सभी देशों के अस्तित्व के संकट के रूप में सामने खड़ी है अतः हमें पर्यावरणीय संतुलन तथा जल संरक्षण एवं संवर्धन की दशा में कार्य करना होगा ।

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 7.9 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

निष्कर्ष:- आज आवश्यकता इस बात की है कि हम सभी भारतवासी यह सुनिश्चित करें कि हमारे लोकतंत्र तथा मानविता में बाधक इन कारकों को समाप्त करने का हम सब सार्थक प्रयास करेंगे जिससे हमारे पूर्वजों द्वारा राष्ट्र के लिए दिए गए बलिदानों की प्रासंगिकता बनी रहे और हम इस लोकतंत्र को सरकार एवं सार्थक बनाएं रख सके।

भारतीय लोकतंत्र के समक्ष इतनी चुनौतियों के बावजूद हमारी यह उपलब्धि है कि दिनों दिन मजबूत हुआ है यह प्रजातंत्र दिनों दिन मजबूत हुआ है जबकि हमारे साथ आजाद हुए दूसरे देशों को लंबे समय तक सैनिक शासन था तानाशाही झेलनी पड़ी है समय-समय पर भारत के मतदाताओं ने यह साबित कर दिया कि वह किसी व्यक्ति विशेष की परवाह नहीं करता और कसौटी पर खड़ा ना उतरने पर बड़े से बड़े नेता को मुख्य धारा से बाहर कर देता है ।

संदर्भ सूची

1. योजना जनवरी 2010 .
2. भारतीय अर्थव्यवस्था, दत्त और सुंदरम 2009 .
3. भारतीय अर्थव्यवस्था, मिश्रा एवं पूरी 2009.
4. राजनीति विज्ञान, असिरवथम 2020.
5. Working a Democratic Constitution: The Indian Experience Granville Austin (1999)
6. Poverty Amid Plenty in the New India, Atul Kohli (2012)
7. India After Gandhi, Ramachandra Guha (2007)
8. Rajni Kothari (2004, Reprint)
5. The Idea of India Sunil Khilnani (1997)
6. The Idea of India, Pratap Bhanu Mehta (2003)
7. The Idea of India, Amartya Sen (2009)
10. India’s Founding Moment, Madhav Khosla (2020)